गागर में सागर

(बहुउद्देश्यीय हिंदी परीक्षा दिग्दर्शिका)

यू.जी.सी. नेट/सेट परीक्षा-पथप्रदर्शिका

डॉ. आरसु

डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ

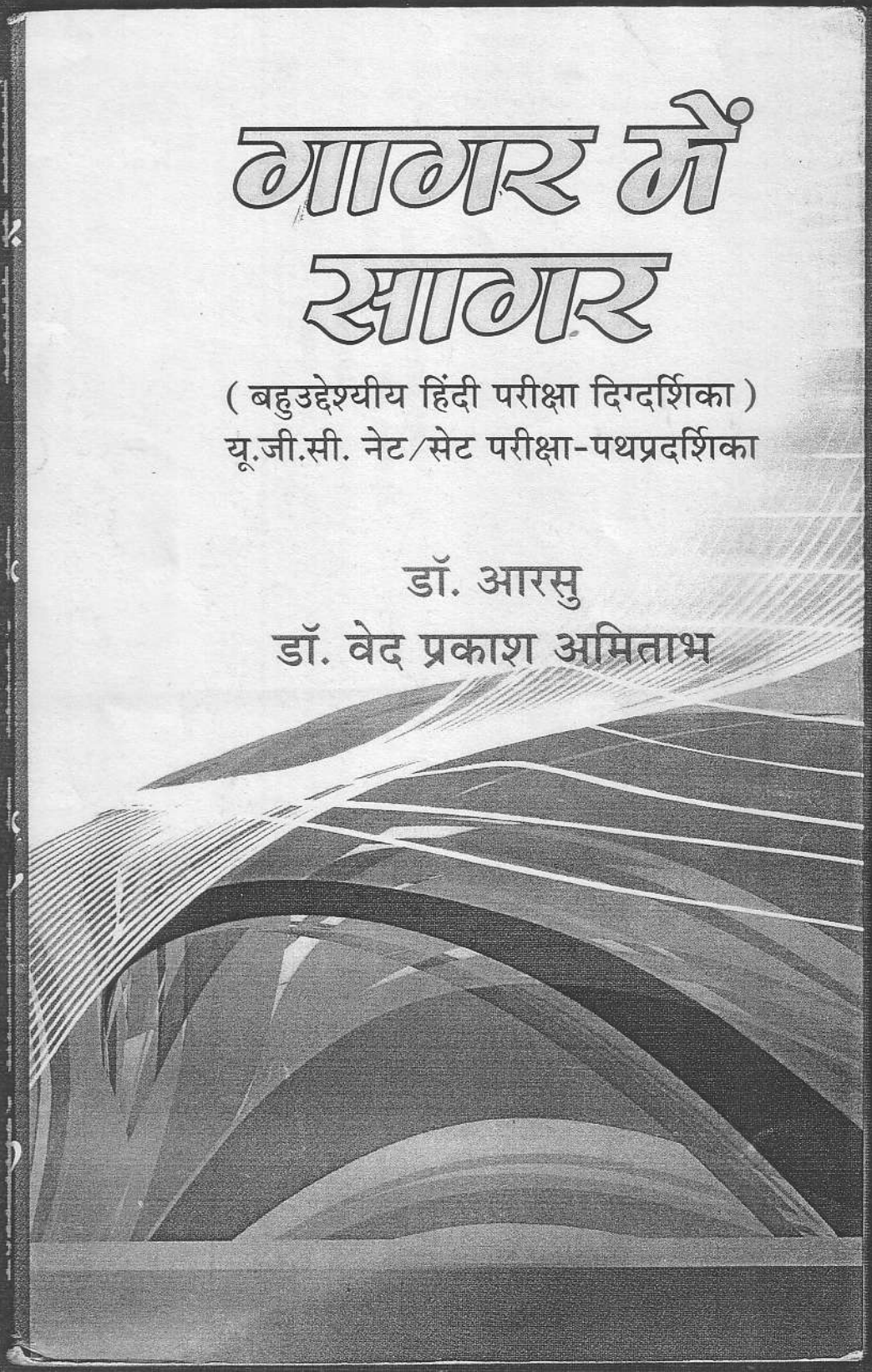

गागर में सागर

(बहुउद्देशीय हिंदी परीक्षा दिग्दर्शिका)

संपादक
डॉ0 आरसु
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी, कालिकट विश्वविद्यालय
डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ
अलीगढ़

प्रकाशक
जगत भारती प्रकाशन
इलाहाबाद

प्रयोगवाद	55
गीत—नवगीत—डॉ. भगत सिंह	56
समकालीन कविता—डॉ. प्रमोद कोवप्रत	59
आलोचना : विविध रूप—डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ	63
महिला लेखन—डॉ. हेना	66
उपन्यास : कुछ विशेष संदर्भ—डॉ. रश्मि यू. एम.	69
समकालीन उपन्यास—राजेश के.	72
समकालीन उपन्यास—आशीवाणी के.	75
समकालीन साहित्य	77
समकालीन महिला उपन्यासकार—डॉ0 लेखा	79
आँचलिक उपन्यास—डॉ. शिवचंद प्रसाद	82
हिन्दी उपन्यास और पर्यावरण-चिंता—डॉ. टीना	84
पत्रकारिता केंद्रित हिन्दी उपन्यास—डॉ. षीबा मनोज	86
हिन्दी उपन्यास और विदेशी पृष्ठभूमि—डॉ0 पी0 सुप्रिया	89
जीवनी परक उपन्यास—डॉ. एस.आर. प्रीता	91
व्यंग्य साहित्य—डॉ. लेखा एम.	95
यात्रा वृत्त-साहित्य—डॉ0 संगीता पी.	97
विविधा—डॉ. षीना ईप्पन	100
हिन्दी साहित्यकारों के कलमी नाम—डॉ. आरसु	103
साहित्यिक पत्रकारिता—डॉ. आरसु	104
महिलाओं का संपादकीय योगदान—डॉ. आरसु	106
गाँधी साहित्य—डॉ0 षबीला के.एस.	107
श्रीलाल शुक्ल—डॉ. लेखा	110
विविधा—डॉ. आरसु	112
बाल साहित्य—वेलायुधन पल्लिक्कल	115
वस्तुनिष्ठ प्रश्न और उत्तर (विविधा)—प्रस्तोता : डॉ. अरविन्दन.एम.	117
देश विभाजन पर केंद्रित उपन्यास—डॉ. मेफ्लवर	121
विश्व हिन्दी सम्मेलन—डॉ. एम. के. प्रीता	123
हिन्दी प्रवासी साहित्य—डॉ. एम.के. प्रीता	126

आमुख

दक्षिण भारत की दक्षिणा

केरल में (कालिकट) सेवारत एक स्वैच्छिक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था है भाषा समन्वय वेदी। भाषाओं को आपस में जोड़कर आगे बढ़ना वेदी का मुख्य लक्ष्य है। भिन्न भाषाओं के अध्यापक, अनुवादक, लेखक, साहित्य प्रेमी वेदी के सदस्य हैं। 1990 में संस्थापित वेदी ने 2015 में रजतजयंती बड़े पैमाने पर मनायी थी। कश्मीरी, असमिया, नेपाली और उड़िया भाषाओं की कहानियों का अनुवाद हिन्दी के माध्यम से मलयालम में लाने का प्रयास हमने इस वर्ष में किया था। लक्षद्वीप की मलयालम कहानियों का अनुवाद हिन्दी में लाने का प्रयास जारी है।

हिन्दी हमारी गतिविधियों की मुख्य कड़ी है। नेट परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए प्रशिक्षण देना भी हमारा एक कार्यक्रम है। तब प्राध्यापक भी कुछ अतिरिक्त सेवा के लिए सामने आ जाते हैं। उनके नोट्स को संयोजित करके एक किताब छापने का विचार तब आया था। कई अध्यापक तथा गवेषकों की मदद तब मिली थी। बिखरी पड़ी सामग्रियों को क्रमबद्ध करने की योजना भी बनायी। 'गागर में सागर' उसका परिणाम है। इसके लेखकों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है। हमारे हिमैषी अलीगढ़ के डॉ. वेदप्रकाश अभिनाम का मार्गदर्शन भी हमें मिला। उनके कुछ प्रिय शिष्य भी हमारी बिरादरी में शामिल हो गये। लोग आते गये-कारवान बनता गया- तब हमारा हौसला बढ़ा। यों यह एक समवत प्रयास बन गया। दक्षिण भारत से इस ढंग का एक प्रयास शायद पहला होगा। कई विषयों को छूने की कामना थी। कुछ विषय छूट गये होंगे। मिलकर चलो संस्कृति को यहाँ एक मूर्त रूप मिल रहा है।

इलाहाबाद की प्रकाशन संस्था 'जगन भारती' का संबल मिलना एक सौभाग्य लगा। हमारे सहयात्री मेहनती हैं। छात्रों को कुछ मार्गदर्शन देना एक सेवा कार्य है। इस पथ पर आगे बढ़ते समय कई सीमाएं भी होंगी। अपने अपने अध्ययन, अध्यापन क्षेत्र से लेखकों ने सामग्रियाँ बटोर ली हैं। अनुवाद, भारतीय साहित्य, दक्षिण भारत का अवदान जैसे कुछ नये विषय भी इस में शामिल है।

ध्येय अच्छा रहें तो मार्ग भी उसके अनुरूप बन जायेगा। मानक, महनीय और महत्वपूर्ण का दावा हम नहीं करेंगे। लेकिन दक्षिण के हिन्दी सेवियों की विनम्र दक्षिणा को रूप इसको हिन्दी के छात्र मान लेगे तो हमारा काम कृतार्थ बन जायेगा। गिलहरी की सेवा भी सार्थक और स्मरणीय हैं। ऐसा सोचकर इसका मूल्यांकन हिन्दी प्रदेश के विद्यार्थी करेंगे। यही हमारी उम्मीद है।

डॉ. आरसु

भारत भर में हर महीने हिन्दी की कई परीक्षाएँ चलती रहती हैं। यू.जी.सी. की नेट, विविध राज्यों की सेट परीक्षाएँ इन में शामिल हैं। संघ लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग इनकी परीक्षाएँ भी निरन्तर चलती रहती है। इन परीक्षाओं के प्रत्याशियों को हिन्दी में उच्च अंक प्राप्त करने के लिए प्रामाणिक तथा स्तरीय किताबों की अत्यंत जरूरत है। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तैयार की गयी एक दिग्दर्शिका है, गागर में सागर। अलीगढ़ के डॉ. वेद प्रताप अमिताभ, तथा कालिकट, केरल के डॉ. आरसु इसके संपादक हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य के विभिन्न प्रवृत्तियों, प्रणेताओं और विधाओं पर विशेष ध्यान देकर इसकी तैयारी हुई है। किताब आकार में छोटी है, लेकिन अंतरभाव में बहुत विशाल है। उत्तर-दक्षिण भाषा, साहित्य, प्राचीन और आधुनिक, भारतीय और विदेशी धाराओं को समेटने का प्रयास भी संपादकों ने किया है। दलित, प्रवासी, महिला लेखन, अनुवाद, पत्रकारिता, साहित्य आदि विधाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। विविध प्रतिष्ठित पुरस्कारों की भी जानकारी इसमें है। हिन्दी के छात्रों के लिए इससे बहुत मदद मिलेगी। यह उनके लिए एक उत्तम परीक्षा गुरु है।

ISBN 978-93-84480-17-2

9 789384 480172 >

जगत भारती प्रकाशन

इलाहाबाद

13. प्रभा खेतान के 'आओ पेपे घर चलें' की कथाभूमि क्या है?
अमेरिका

14. मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' के मुख्य पात्र का नाम बताइए?
इर्विंग ब्रिटमेन

15. कमल कुमार के 'हैमबरगर' की कथाभूमि क्या है?
अमेरिका

16. उषा प्रियवंदा का 'अंतर्वंशी' किस वर्ष प्रकाशित हुआ?
2000 ई.

17. 'निष्कवच' किसकी रचना है?
गजी सेठ

18. निर्मल वर्मा के 'वे दिन' की कथाभूमि क्या है?
चेकोस्लोवाकिया

19. द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिकाओं से पीड़ित जापानी जनता का चित्रण करने वाली भगवतरवरूप चतुर्वेदी का उपन्यास कौन-सा है?
हिरोशिमा की छाया में

20. नासिरा शर्मा के किस उपन्यास में अयातुल्ला खुमैनी की इस्लामीं क्रांति को आधा बनाया गया है?
सात नदियाँ एक समुन्दर

21. अज्ञेय ने किस उपन्यास में मृत्यु बोध को विषय बनाया है?
अपने अपने अजनबी

22.'वे दिन' उपन्यास के बाल पात्र का नाम क्या है?
मीता

23. 'रुकोगी नहीं राधिका' कौन से पात्र 'कल्चरल शॉक' व 'रिवर्स कल्चरल शॉक' से गुजरते हैं?
राधिका और मनीष

जीवनीपरक उपन्यास

डॉ. एस.आर. प्रीता

1. हिंदी साहित्य के जीवनचरित्रमूलक उपन्यास का उद्‌भव किस औपन्यासिक शैली में हुआ?
ऐतिहासिक चरित्रप्रधान उपन्यास

2. जीवनचरित्र साहित्य पर केन्द्रित लिटनस्ट्राची की कृति कौन सी है?
Eminent Victorious-1918

3. हिन्दी साहित्य का प्रथम जीवनचरित्रमूलक उपन्यास कौन-सा है?
भारती का सपूत (1954) (चरित्रनायक—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

4. हिन्दी साहित्य का पहला जीवनचरित्रमूलक उपन्यासकार कौन है?
रांगेय राघव

5. राँगेय राघव ने कितने जीवनचरित्रमूलक उपन्यासों की रचना की?
आठ

6. "भविष्य में उपन्यास में कल्पना कम, सत्य अधिक होगा, भावी उपन्यास जीवनचरित्र होगा, चाहे किसी बड़े आदमी का या छोटे आदमी का"—किसका कथन है?
प्रेमचंद

7. अमृतलाल नागर ने कितने जीवनचरित्रमूलक उपन्यास लिखे हैं?
दो—मानस का हंस (1972), खंजन नयन (1987)

8. 'धूनी का धुआँ' (1959) उपन्यास के रचनाकार कौन हैं?
रांगेय राघव (चरित नायक—नाथपंथी साहित्यकार गोरखनाथ)

9. वीरेन्द्र कुमार जैन कृत तीर्थंकर महावीर के जीवनचरित्र पर आधारित उपन्यास?
अनुत्तर योगी—चार खण्ड (1974, 1975, 1978, 1981)

10. महाराणा प्रताप को चरितनायक बनाकर राजेन्द्रमोहन भटनागर ने कितने जीवनचरितमूलक उपन्यास लिखे हैं?
दो—नीले घोड़े के सवार (1984), एक अंतहीन युद्ध (1985)